Eik Ghalati Ka Izala

एक ग़लती का निवारण

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम

एक ग़ल्ती का निवारण

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम

ایک غلطی کا اِزالہ

मूल-किताब का नाम	एक ग़ल्ती का इज़ालः (एक ग़ल्ती का निवारण)
लेखक	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद
अनुवादक	अलीहसन एम.ए.एच.ए
संख्या	
प्रथम संस्करण, हिन्दी	मार्च 2011 ई.
प्रकाशक	नज़ारत नश्रो इशाअत, क़ादियान-143516
प्रैस	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

Name of Book	**Eik Ghalti Ka Izalah** (Eik Ghalti Ka Nivaran)
By	Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani The Promised Massih & Mahadi a.s
Translated by	Ali Hasan M.A.H.A
Copies	
1st Edition Hindi	March 2011.
Published By	Nazarat Nashro Ishat Qadian-143516, INDIA
Printed at	Fazle Umar Printing Press Qadian
ISBN	978-81-7912308-9

प्रकाशक की ओर से

चूँकि पवित्र ग्रन्थ क़ुरआन शरीफ़ मूल अरबी भाषा में है और बहुत गूढ़ रहस्यों से भरा हुआ है। इस के अतिरिक्त हदीसों का संकलन भी अरबी भाषा में है जिनमें अरबी मुहावरों और लोकोक्तियों की भरमार है। इसलिए अरबी भाषा से अनभिज्ञता के कारण नीम हकीम और सरसरी दृष्टि से पढ़ने वाले लोग इस्लाम की वास्तविकता को समझने से वंचित रह जाते हैं और मूर्ख मौलवियों के बहकावे में आकर और ख़ात्मुन्नबीयीन के यथार्थ को न समझ कर स्वयं इस्लाम और उसके पवित्र ग्रन्थ क़ुरआन और पवित्र रसूल ख़ात्मुन्नबीयीन पर आरोपों का कारण बनते हैं और दूसरों को भी इसका अवसर देते हैं।

इस पुस्तक में स्वयं हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन करीम और हदीसों के अनुसार ख़त्म-ए-नुबुव्वत की वास्तविकता और ख़ात्मुन्नबीयीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यथार्थ मुक़ाम और श्रेयों (बरकतों) का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि नबी किसको कहते हैं और मैं किस प्रकार का नबी हूँ और क्यों हूँ। आपकी पुस्तक "एक ग़ल्ती का इज़ाल:" के नाम से (मूल उर्दू भाषा में) विश्व-विख्यात है। लोगों की इच्छा और वर्तमान आवश्यकतानुसार इसका हिन्दी अनुवाद अलीहसन M.A., H.A.ने शीर्षक एक ग़ल्ती का निवारण के नाम से किया है जो हिन्दी भाषियों के लाभार्थ हेतु

प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक ख़ातमुन्नबीयीन की यथार्थ वास्तविकता और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद के दावा को समझने में सार्थक सिद्ध होगी। ख़ुदा से दुआ है कि वह ऐसा ही करे। तथास्तु

पाठकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक का स्वयं अध्ययन करें और अपने मित्रों को भी पढ़ने की प्रेरणा दें ताकि उपरोक्त विषय का शुद्ध और वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो।

भवदीय

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नशरो इशाअत

(अध्यक्ष प्रकाशन विभाग)

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

एक ग़ल्ती का निवारण

हमारी जमाअत में से कुछ लोग जो हमारे दावा और दलीलों से कम जानकारी रखते हैं जिनको न ध्यानपूर्वक किताबें पढ़ने का संयोग हुआ और न वे एक उचित समय तक संगति में रहकर अपनी मालूमात को पूर्ण कर सके। वे कभी-कभी विरोधियों के किसी एतराज़ पर ऐसा जवाब देते हैं जो सरासर घटना के विपरीत होता है। इसलिए सच्चे होने के बावजूद उनको शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। अभी कुछ दिन हुए हैं कि एक साहब से एक विरोधी ने यह एतराज़ किया कि जिसकी तुमने बैअत की है वह नबी और रसूल होने का दावा करता है। उसका जवाब सिर्फ़ इन्कार के शब्दों से दिया गया है। हालाँकि ऐसा जवाब सही नहीं है। सच बात यह है कि ख़ुदा तआला की वह पवित्र ईशवाणी जो मुझ पर उतरती है उसमें रसूल और मुर्सिल और नबी आदि के ऐसे शब्द एक बार नहीं बल्कि सैंकड़ों बार मौजूद हैं। फिर किस तरह यह जवाब सही हो सकता है कि ऐसे शब्द मौजूद नहीं हैं। बल्कि इस समय तो पहले युग की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और व्याख्या के साथ ये शब्द मौजूद हैं और बराहीन अहमदिया में भी जिसको प्रकाशित हुए बाईस वर्ष बीत चुके हैं बहुत से शब्द मौजूद हैं। अत: वे ईशवाणियाँ जो बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी हैं उनमें से एक यह ईशवाणी भी है।

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ

(देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-498)

इसमें स्पष्ट रूप से इस विनीत को रसूल कह कर पुकारा गया है। फिर इसके बाद इसी किताब में मेरे बारे में यह ईशवाणी है।

جری اللہ فی حلل الانبیاء

अर्थात ख़ुदा का रसूल नबियों के वेष में (देखो–बराहीन अहमदिया पृष्ठ–504)

फिर इसी किताब में इस ईशवाणी के निकट ही यह ईशवाणी है

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ وَالَّذِیْنَ مَعَہٗ اَشِدَّآءُ عَلَی الْکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَھُمْ

इस ईशवाणी में मेरा नाम मुहम्मद रखा गया और रसूल भी। फिर यह ईशवाणी है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 557 में मौजूद है।

''दुनिया में एक नज़ीर (सचेतक) आया।'' इसका दूसरा वाचन यह है कि ''दुनिया में एक नबी आया।'' इसी तरह बराहीन अहमदिया में और कई जगह रसूल के शब्द से इस विनीत को पुकारा गया है। इस लिए अगर यह कहा जाए कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ात्मुन्नबीयीन हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी किस तरह आ सकता है? इसका जवाब यही है कि निःसन्देह उस तरह से तो कोई नबी नया हो या पुराना नहीं आ सकता जिस तरह से आप लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आख़िरी ज़माना में उतारते हैं और फिर उस हालत में उनको नबी भी मानते हैं और उन पर चालीस वर्ष तक नुबुव्वत की ईशवाणी का अवतरित होते रहना और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवधि से भी बढ़ जाना आप लोगों का अक़ीदा है। ऐसा अक़ीदा तो निःसन्देह गुनाह है और आयत

وَلٰکِنْ رَّسُوْلَ اللّٰہِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ (الاحزاب آیت ۴۱)۔

और हदीस لَانَبِیَّ بَعْدِیْ (ला नबी य बादी) इस अक़ीदे के पूर्णतः झूठ होने पर स्पष्टतः गवाही दे रही हैं। लेकिन हम इस प्रकार की आस्थाओं के घोर विरोधी हैं और हम इस आयत पर सच्चा और पूर्ण ईमान रखते हैं जो फ़रमाया कि

وَلٰکِنْ رَّسُوْلَ اللّٰہِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ

और इस आयत में एक पेशगोई (भविष्यवाणी) है जिस के रहस्यों के

बारे में हमारे मुख़ालिफ़ों को पता नहीं और वह यह है कि अल्लाह तआला इस आयत में फ़रमाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद पेशगोइयों के दरवाज़े क़यामत तक बन्द कर दिये गये हैं और संभव नहीं कि अब कोई हिन्दू या यहूदी या ईसाई या कोई परम्परावादी मुसलमान नबी के शब्द को अपने बारे में साबित कर सके। नुबुव्वत की सारी खिड़कियाँ बन्द की गयीं मगर एक ख़िड़की सीरत-ए-सिद्दीक़ी की खुली है अर्थात फ़ना फ़ीर्रसूल की (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञापालन और प्रेम में समर्पण की)। अतः जो भक्त इस खिड़की की राह से ख़ुदा के पास आता है उस पर ज़िल्ली (अर्थात प्रतिरूप के) तौर पर वही नुबुव्वत की चादर पहनाई जाती है जो नुबुव्वत-ए-मुहम्मदी की चादर है। इसलिए उसका नबी होना ग़ैरत की जगह नहीं क्योंकि वह अपने अस्तित्व से नहीं बल्कि अपने नबी के कुंड से लेता है और न (यह) अपने लिए बल्कि उसी के प्रताप के लिए। इसलिए उसका नाम आसमान पर मुहम्मद और अहमद है। इसका यह अर्थ है कि मुहम्मद की नुबुव्वत अन्ततः मुहम्मद को ही मिली यद्यपि बुरूज़ी (प्रतिरूपी) तौर पर, न कि किसी और को। अतः आयत

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (الاحزاب آیت ۴۱)

का यही अर्थ है कि

لَيْسَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِ الدُّنْيَا وَلٰكِنْ هُوَ اَبٌ لِرِجَالِ الْاٰخِرَةِ
لِاَنَّهٗ خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ وَلَا سَبِيْلَ اِلٰى فُيُوْضِ اللّٰهِ مِنْ غَيْرِ تَوَسُّطِهٖ

(अनुवाद- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भौतिक तौर पर दुनिया के लोगों में से किसी के बाप नहीं हैं। परन्तु अब वह क़यामत तक लोगों के रूहानी बाप हैं इसलिए कि वह ख़ात्मुन्नबीयीन हैं। उनके माध्यम के बिना अब अल्लाह की बरकतें पाने का कोई मार्ग नहीं।-अनुवादक)

अतः मेरी नुबुव्वत और रिसालत मुहम्मद और अहमद होने के दृष्टिकोण से है न कि मेरे अपने अस्तित्व के कारण से। और यह नाम फ़ना फिर्रसूल

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञा पालन और पूर्ण समर्पित होने के कारण से मुझे मिला। इसलिए ख़ात्मुन्नबीयीन के अर्थ में कोई फ़र्क न आया। लेकिन ईसा अलैहिस्सलाम के उतरने से अवश्य फ़र्क आएगा। और यह भी याद रहे कि शब्दकोष के अनुसार नबी का यह अर्थ है कि ख़ुदा की ओर से ईशवाणी पाकर ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें बताने वाला। अतः जहाँ यह अर्थ चरितार्थ होगा वहाँ नबी का शब्द भी चरितार्थ होगा और नबी का रसूल होना शर्त है क्योंकि अगर वह रसूल न हो तो फिर ग़ैब (परोक्ष) की शुद्ध और पवित्र ख़बर उसको मिल नहीं सकती। जैसा कि निम्नलिखित आयत बताती है कि

لَا یُظْہِرُ عَلٰی غَیْبِہٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ (سورۃ الجن آیت ۲۷،۲۸)۔

अनुवाद– वह अपने ग़ैब (परोक्ष) की बातों को अपने रसूल के अतिरिक्त जिसको वह इस काम के लिए पसन्द करे, किसी पर स्पष्ट नहीं करता– अनुवादक)

अब अगर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद इस अर्थ के अनुसार नबी के पैदा होने से इन्कार किया जाए तो इससे यह मानना पड़ता है कि यह अक़ीदा (विश्वास) रखा जाय कि यह उम्मत (अर्थात उम्मते मुहम्मदिया) ख़ुदा तआला की ईशवाणी और संवाद से बेनसीब (अभागी) है। क्योंकि जिसके हाथ पर अल्लाह की ओर से ग़ैब (परोक्ष) की भविष्यवाणियाँ ज़ाहिर होंगी, अवश्य उस पर आयत لَا یُظْہِرُ عَلٰی غَیْبِہٖ (ला युज़्हिरू अला ग़ैबिही) के अनुसार नबी का अर्थ सार्थक आएगा। इसी प्रकार जो ख़ुदा तआला की ओर से भेजा जाएगा उसी को हम रसूल कहेंगे। बीच में फ़र्क़ यह है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद क़यामत तक ऐसा कोई नबी नहीं आयेगा जिस पर नयी शरीअत (धर्म विधान) अवतरित हो या जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मध्यस्थता के बग़ैर और ऐसी फ़ना फ़िर्रसूल की हालत के (अर्थात पूर्ण आज्ञा पालन और समर्पण के माध्यम के बिना) जो ख़ुदा के निकट उसका नाम मुहम्मद और

अहमद रखा जाए यूँ ही नुबुव्वत की उपाधि प्रदान की जाए। और जो ऐसा दावा करता है वह काफ़िर है। इसमें असल भेद यही है कि ख़ात्मुन्नबीयीन का अर्थ यह चाहता है कि जब तक भिन्नता का कोई थोड़ा सा भी अन्तर बाक़ी है उस समय तक अगर कोई नबी कहलाएगा तो समझो उस मुहर को तोड़ने वाला होगा जो ख़ात्मुन्नबीयीन पर है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति उसी ख़ात्मुन्नबीयीन में ऐसा खो जाए कि अत्यन्त एकरूपता के कारण और भिन्नता मिटा कर उसी का नाम पा लिया हो और स्वच्छ शीशे की तरह मुहम्मदी चेहरा का उसमें प्रतिविम्बन हो गया हो तो वह बिना मुहर तोड़े नबी कहलाएगा क्योंकि वह प्रतिरूप के तौर पर मुहम्मद है। इसलिए उस व्यक्ति के दावा–नुबुव्वत के बावजूद जिसका नाम प्रतिरूप के तौर पर मुहम्मद और अहमद रखा गया फिर भी हमारा आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ात्मुन्नबीयीन ही रहा। क्योंकि (प्रतिरूप के तौर पर) यह दूसरा मुहम्मद उसी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्वीर और उसी का नाम है। मगर ईसा मुहर तोड़ने के बिना आ नहीं सकता। क्योंकि उसकी नुबुव्वत एक अलग नुबुव्वत है।

अब अगर प्रतिरूपक अर्थों में भी कोई व्यक्ति नबी और रसूल नहीं हो सकता तो फिर इस आयत के क्या अर्थ हैं कि

[1] اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ (سورۃ الفاتحۃ آیت ٦،٧)۔

---

1 यह अवश्य याद रखो कि इस उम्मत के लिए वादा है कि वह हर एक ऐसे इनाम पायेगी जो पहले नबी और सिद्दीक़ पा चुके। अतः उन समस्त इनामों के अतिरिक्त वे नुबुव्वतें और भविष्यवाणियाँ भी हैं जिनकी दृष्टि से पैगम्बर नबी कहलाते रहे। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ नबी और रसूल होने के अतिरिक्त दूसरों पर ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान का दरवाज़ा बन्द करता है।

(...शेष अगले पृष्ट पर)

इसलिए याद रखना चाहिए कि इन अर्थों की दृष्टि से मुझे नुबुव्वत और रिसालत से इन्कार नहीं है। इसी दृष्टि से हदीस की किताब सहीह मुस्लिम में भी मसीह मौऊद का नाम नबी रखा गया। अगर ख़ुदा तआला से ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें पाने वाला नबी का नाम नहीं रखता तो फिर बतलाओ किस नाम से उसको पुकारा जाय। अगर कहो कि उसका नाम मुहद्दस रखना चाहिए तो मैं कहता हूँ कि तहदीस का अर्थ किसी शब्दकोष की किताब में ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें पाकर भविष्यवाणी करना नहीं है लेकिन नुबुव्वत का अर्थ ग़ैब (परोक्ष) की बातों को पाकर भविष्यवाणी करना है और नबी एक ऐसा शब्द है जो अरबी और इब्रानी भाषाओं में समानार्थ है। अर्थात इब्रानी में इसी शब्द को नाबी कहते है और यह शब्द नाबा से बना है जिसका अर्थ यह है कि ख़ुदा से ख़बर पाकर भविष्यवाणी करना। और नबी के लिए शरीअत का लाना शर्त नहीं है। यह सिर्फ़ ईशप्रदत्त अनमोल इनाम है जिसके द्वारा ग़ैब (परोक्ष) की बातें प्रकट होती हैं। अतः मैं जबकि इस समय तक लगभग डेढ़ सौ भविष्वाणियाँ ख़ुदा की ओर से पाकर अपनी आँखों से स्वयं देख चुका हूँ कि वे स्पष्ट तौर पर पूरी हो गयीं तो मैं अपने बारे में नबी या रसूल के नाम

जैसा कि आयत

لَا یُظۡهِرُ عَلٰی غَیۡبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰی مِنۡ رَّسُوۡلٍ (سورۃ الجن آیت ۲۸،۲۷)۔

(ला युज़्हिरू अला ग़ैबिही अहदन इल्ला मनिर्तजा मिर्रसूलिन) से स्पष्ट है। अतः शुद्ध ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें पाने के लिए नबी होना अनिवार्य हुआ और आयत اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ (अन्अम्ता अलैहिम) गवाही देती है कि इस शुद्ध ग़ैब (परोक्ष) के पाने से यह उम्मत वंचित नहीं। और शुद्ध ग़ैब (परोक्ष) की बातों का पाना उपरोक्त आयत के अनुसार नुबुव्वत और रिसालत को चाहता है और वह राह सीधे तौर पर (Direct) बन्द है। इसलिए मानना पड़ता है कि इस ईशप्रदत्त अनमोल इनाम के लिए केवल प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब के तौर पर और फ़ना फ़िर्रसूल (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञापालन और समर्पण) का दरवाज़ा खुला है। अतः चिन्तन करो और सोचो।

से कैसे इनकार कर सकता हूँ। जब ख़ुदा तआला ने स्वयं मेरे ये नाम रखे हैं तो मैं कैसे रद्द कर दूँ या क्यूँ उसके अतिरिक्त किसी दूसरे से डरूँ। मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है और जिस पर झूठ गढ़ना लानतियों (अर्थात धिक्कृत लोगों) का काम है कि उसने मसीह मौऊद बनाकर मुझे भेजा है। और मैं जैसा कि क़ुरआन शरीफ की आयतों पर ईमान रखता हूँ उसी तरह बिना किसी कण मात्र अन्तर के ख़ुदा की उस स्पष्ट वह्यी (ईशवाणी) पर ईमान लाता हूँ जो मुझे हुई। जिसकी सच्चाई उसके निरन्तर निशानों से मुझ पर खुल गयी है और मैं बैतुल्लाह (अर्थात काबा शरीफ़) में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूँ कि वह पवित्र ईशवाणी जो मुझ पर उतरती है वह उसी ख़ुदा की वाणी है जिसने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अपनी वाणी अवतरित की थी। मेरे लिए धरती ने भी गवाही दी और आसमान ने भी। इस तरह से मेरे लिए आसमान भी बोला और ज़मीन भी, कि मैं ख़लीफ़तुल्लाह (अल्लाह का ख़लीफ़ा) हूँ। मगर भविष्यवाणियों के अनुसार आवश्यक था कि इन्कार भी किया जाता इसलिए जिनके दिलों पर पर्दे हैं वे स्वीकार नहीं करते। मैं जानता हूँ कि अवश्य ख़ुदा मेरी सहायता करेगा जैसा कि वह सदैव अपने रसूलों(अवतारों) की सहायता करता रहा है। कोई नहीं कि जो मेरे मुक़ाबले पर ठहर सके, क्योंकि ख़ुदा की सहायता उनके साथ नहीं।

जिस-जिस जगह मैंने नबी या रसूल होने से इन्कार किया है सिर्फ़ इन अर्थों के अनुसार किया है कि मैं स्वतन्त्र तौर पर कोई शरीअत (धर्मविधान) लाने वाला नहीं हूँ और न मैं स्वतन्त्र तौर पर नबी हूँ। मगर इन अर्थों की दृष्टि से कि मैंने अपने आज्ञापक रसूल (अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रूहानी बरकतें पाकर और अपने लिए उसका नाम पाकर, उसके माध्यम से ख़ुदा की ओर से ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान पाकर रसूल और नबी हूँ मगर बिना किसी नयी शरीअत के। इस तरह का नबी कहलाने से मैंने कभी इन्कार नहीं किया। बल्कि इन्हीं अर्थों से ख़ुदा ने

मुझे नबी और रसूल करके पुकारा है। इसलिए अब भी मैं इन अर्थों की दृष्टि से नबी और रसूल होने से इन्कार नहीं करता और मेरा यह कथन कि

من نیستم رسول ونیا وردہ ام کتاب

इसका अर्थ सिर्फ़ यह है कि मैं शरीअत वाला रसूल नहीं हूँ। हाँ यह बात भी याद रखनी चाहिए और कभी नहीं भूलना चाहिए कि मैं नबी और रसूल के शब्द से पुकारे जाने के बावजूद ख़ुदा की ओर से सूचित किया गया हूँ कि ये तमाम् बरकतें बिना माध्यम के, सीधे तौर पर (Direct) मुझ पर नहीं हैं बल्कि आसमान पर एक पवित्र वजूद है जिसकी रूहानी अनुकंपा मुझ पर है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इस माध्यम की दृष्टि से और उस में होकर और उसके नाम मुहम्मद (स.अ.व) और अहमद (स.अ.व) से नामित होकर मैं रसूल भी हूँ और नबी भी हूँ अर्थात भेजा गया भी और ख़ुदा से ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें पाने वाला भी और इस तरह से ख़ात्मुन्नबीयीन की मुहर टूटने से बची रही। क्योंकि मैंने प्रतिबिम्ब और प्रतिरूप के तौर पर मुहब्बत के दर्पण के द्वारा वही नाम पाया। अगर कोई व्यक्ति इस ईशवाणी पर नाराज़ हो कि क्यों ख़ुदा तआला ने मेरा नाम नबी और रसूल रखा है तो यह उसकी मूर्खता है। क्योंकि मेरे नबी और रसूल होने से ख़ुदा की मुहर नहीं टूटती।[2]

---

2 यह कैसी अच्छी बात है कि इस तरह से न तो ख़ात्मुन्नबीयीन की पेशगोई की मुहर टूटी और न उम्मत के सब लोग नबुव्वत के अर्थ से जो आयत لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖ के अनुसार है वंचित रहे। मगर हज़रत ईसा अलै. को जिन को इस्लाम से 600 वर्ष पूर्व नुबुव्वत मिली भी पुनः उतारने से इस्लाम का कुछ शेष नहीं रहता और आयत ख़ात्मुन्नबीयीन को पूर्णतः झुठलाना पड़ता है। इसके विरूद्ध हम केवल मुख़ालिफ़ों की गालियाँ सुनेंगे। तो वे गालियाँ दें।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ۔

(अनुवाद–और वे लोग जो अत्याचारी हैं अवश्य जान लेंगे कि किस स्थान की ओर उनको लौटकर जाना होगा।–अनुवादक)

यह बात स्पष्ट है कि जैसा कि मैं अपने बारे में कहता हूँ कि ख़ुदा ने मुझे रसूल और नबी के नाम से पुकारा है ऐसा है, मेरे मुख़ालिफ़, हज़रत ईसा इब्नि मरियम के बारे में कहते हैं कि वह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद पुनः दुनिया में आयेंगे। और चूँकि वह नबी हैं इसलिए उनके आने पर भी वही ऐतराज़ होगा जो मुझ पर किया जाता है अर्थात यह कि ख़ात्मुन्नबीयीन की मुहर-ए-ख़त्मियत टूट जाएगी। मगर मैं कहता हूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद जो सचमुच ख़ात्मुन्नबीयीन थे मुझे नबी और रसूल के शब्द से पुकारे जाना कोई एतराज़ की बात नहीं और न इससे ख़त्मियत की मुहर टूटती है। क्योंकि मैं बार-बार बतला चुका हूँ कि मैं आयत وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (سورة الجمعة:٤)۔ के अनुसार प्रतिरूप की दृष्टि से वही नबी ख़ात्मुल अम्बिया हूँ और ख़ुदा ने आज से बीस वर्ष पहले बराहीन-अहमदिया में मेरा नाम मुहम्मद और अहमद रखा है और मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ही वजूद ठहराया है। अतएव इस दृष्टि से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ात्मुल अम्बिया होने में मेरी नुबुव्वत से कोई आँच नहीं आयी। क्योंकि प्रतिरूप (प्रतिबिम्ब) अपने असल से अलग नहीं होता और चूँकि मैं प्रतिरूप के तौर पर मुहम्मद हूँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इसलिए इस तरह से ख़ात्मुन्नबीयीन की मुहर नहीं टूटी क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत मुहम्मद (स.अ.व) तक ही सीमित रही अर्थात हर हाल में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही नबी रहे न कि और कोई। अर्थात जब मैं प्रतिरूप के तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हूँ और प्रतिरूप के रंग में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की नुबुव्वत के साथ-साथ सारी मुहम्मदी विशेषतायें मेरे प्रतिरूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित हैं तो फिर कौन सा अलग इन्सान हुआ जिसने अलग तौर पर नुबुव्वत का दावा किया। भला अगर मुझे नहीं मानते तो यूँ समझ लो कि तुम्हारी हदीसों में लिखा है कि

महदी मौऊद ख़ल्क़ और ख़ुल्क़ (अर्थात पैदाइश और चरित्र) में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह होगा और उसका नाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम के मुताबिक होगा। अर्थात उसका नाम भी मुहम्मद और अहमद होगा। और उसके अहल-ए-बैत में से होगा।[3]

---

3 यह बात मेरे पूर्वजों के इतिहास से साबित है कि हमारी एक दादी कुलीन सादात (सैयद) ख़ानदान से और हज़रत फ़ातिमा की नस्ल से थी। इसकी तस्दीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी की और स्वप्न में मुझे कहा कि

سلمان منا اهل البيت علىٰ مشرب الحسن

मेरा नाम सिलमान रखा अर्थात दोसिलम। और सिलम अरबी में सुलह को कहते हैं अर्थात पहले से यह निश्चित है कि मेरे हाथ पर दो सुलह होंगी। एक आन्तरिक, जो कि अन्दरूनी ईर्ष्या-द्वैष और वैमनस्यता को दूर करेगी। दूसरी बाह्य, जो कि बेरूनी वैमनस्यता के कारणों को ख़त्म करके और इस्लाम की महानता दिखाकर दूसरे धर्म वालों को इस्लाम की ओर झुका देगी। ज्ञात होता है कि हदीस में जो सिलमान शब्द आया है उस से भी मैं मुराद हूँ। अन्यथा उस सिलमान पर (जो पहले गुज़र चुका है) दो सुलह की भविष्यवाणी चरितार्थ नहीं होती। और मैं ख़ुदा से ख़बर पाकर कहता हूँ कि मैं फ़ारसी नस्ल में से हूँ और उस हदीस के अनुसार जो कन्जुल उम्माल में है फ़ारस की नस्ल भी इस्राईल की नस्ल और अहल-ए-बैत में से हैं और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाह अन्हा ने कश्फ़ी हालत (तन्द्रावस्था) में अपनी रान(जाँघ) पर मेरा सिर रखा और मुझे दिखाया कि मैं उसमें से हूँ अतएव यह कश्फ़ बराहीन अहमदिया में मौजूद है। *

** बराहीन अहमदिया में यह कश्फ़ ज्यों का त्यों शब्दों में मौजूद है और ऐसा ही पूर्वोक्त इल्हाम में जो आल-ए-रसूल पर दुरूद भेजने का आदेश है तो उसमें भी यही रहस्य है कि ख़ुदा तआला के दिव्यज्ञान और बरकतों को पाने में अहल-ए-बैत से मुहब्बत करने का भी बहुत बड़ा दख़ल है और जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के प्यारों*

और कई हदीसों में है कि मुझ में से होगा। यह गूढ़ संकेत इस बात की ओर है कि वह आध्यात्मिकता की दृष्टि से उसी नबी में से निकला हुआ होगा और उसी की रुह (आत्मा) का रूप होगा। इस पर अति स्पष्ट संकेत यह है कि जिन शब्दों के साथ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सम्बन्ध बयान किया और यहाँ तक कि दोनों के नाम एक कर दिए। इन शब्दों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस मौऊद को

में दाख़िल होता है वह उन्हीं पवित्र लोगों की विरासत पाता है और तमाम् ज्ञान और मर्म में उनका वारिस (उत्तराधिकारी) ठहरता है। इस जगह एक अति स्पष्ट कश्फ़ याद आया और वह यह है कि एक बार मग़रिब की नमाज़ के बाद ठीक जाग्रतावस्था में एक थोड़े से अन्तर्ध्यान के एहसास से जो थोड़ी से ऊँघ की तरह था, एक अजीब हालत ज़ाहिर हुई कि पहले अचानक कुछ आदमियों के जल्द-जल्द आने की आवाज़ आई जैसी तेज़-तेज़ चलने की हालत में पाँव की जूती और मोज़े की आवाज़ आती है। फिर उसी समय पाँच आदमी अत्यन्त रौबदार, प्यारे और सुन्दर चेहरे वाले सामने आ गये। अर्थात पैग़म्बरे ख़ुदा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत अली[रज़ि], हज़रत हसन[रज़ि], हज़रत हुसैन[रज़ि] और फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ियल्लाह अन्हा। और एक ने उनमें से, और ऐसा याद पड़ता है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाह अन्हा ने बड़े प्यार और हमदर्दी से मेहरबान माँ की तरह इस विनीत का सिर अपनी रान(जाँघ) पर रख लिया। फिर इसके बाद एक किताब मुझ को दी गयी जिसके बारे में यह बतलाया गया कि यह तफ़सीर-ए-क़ुरआन (अर्थात क़ुरआन की व्याख्या) है जिसको अली[रज़ि]. ने संकलित किया है और अब अली वह तफ़सीर तुझको देता है। अतः समस्त प्रशंसायें ख़ुदा के लिए हैं ।'' (बराहीन-अहमदिया जिल्द 4, पृ 503 हाशिया दर हाशिया)

अपना बुरूज़ (प्रतिरूप) बयान करना चाहते हैं। जिस तरह कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यशूआ प्रतिरूप था और प्रतिरूप के लिए यह आवश्यक नहीं कि प्रतिरूपक मूल (असल) व्यक्ति का बेटा या नवासा हो। हाँ यह आवश्यक है कि आध्यात्मिक संबंधों की दृष्टि से व्यक्ति मौरिद-ए-बुरूज़ साहिब-ए-बुरूज़ में से (अर्थात प्रतिरूपक, मूल व्यक्ति से ही) निकला हुआ हो और प्रारम्भ से ही दोनों के बीच परस्पर आकर्षण और संबंध हो। इसलिए यह विचार आंहज़रत सल्लल्लाहु के ज्ञान और अध्यात्म की शान के बिल्कुल विपरीत है कि आप इस बयान को तो छोड़ दें जो बुरूज़ (प्रतिरूप) के अर्थ को प्रकट करने के लिए आवश्यक है और यह बात कहना शुरू कर दें कि वह मेरा नवासा होगा। भला नवासा होने से बुरूज़ का क्या सम्बन्ध। और अगर बुरूज़ के लिए यह सम्बन्ध आवश्यक था तो सिर्फ़ नवासा होने का एक नाक़िस सम्बन्ध क्यों अपनाया गया, बेटा होना चाहिए। लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी पवित्र वाणी (क़ुरआन करीम) में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी के बाप होने के बारे में इन्कार किया है परन्तु बुरूज़ (प्रतिरूप) की ख़बर दी है अगर बुरूज़ यथार्थ न होता तो फिर आयत وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ में उस मौऊद (अर्थात जिसके आने का वचन दिया गया हो) के मित्र आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा क्यों ठहरते। और बुरूज़ (प्रतिरूप) के इन्कार से इस आयत को झुठलाना पड़ता है। ज़ाहिरी सोच के लोगों ने कभी उस मौऊद को हसन[रज़ि] की औलाद बनाया और कभी हुसैन[रज़ि] की और कभी अब्बास[रज़ि] की। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का केवल यह उद्देश्य था कि वह बेटों की तरह उस का वारिस होगा, उसके नाम का वारिस उसके स्वभाव का वारिस उसके ज्ञान का वारिस, उसकी रूहानियत (अध्यात्मवाद) का वारिस और हर एक दृष्टि से अपने अन्दर उसकी तस्वीर दिखलाएगा और वह अपनी ओर से नहीं बल्कि सब कुछ उस से लेगा, और उसमें लीन होकर उसके चेहरा को दिखाएगा। अतः जिस तरह प्रतिरूप के तौर पर उसका नाम लेगा उसका स्वभाव लेगा उसका ज्ञान

लेगा उसी तरह उसका नबी लक़ब (उपाधि) भी लेगा। क्योंकि प्रतिबिम्बित तस्वीर उस समय तक पूरी नहीं हो सकती जब तक कि यह तस्वीर हर एक दृष्टि से अपने असल (मूल) की विशेषतायें अपने अन्दर न रखती हो। चूँकि नुबुव्वत भी नबी में एक विशेषता है इसलिए आवश्यक है कि प्रतिबिम्बित तस्वीर में वह विशेषता भी दिखाई दे। तमाम् नबी इस बात को मानते चले आए हैं कि प्रतिबिम्बित वजूद अपने असल की पूरी तस्वीर होता है यहाँ तक कि नाम भी एक हो जाता है। अतः इस दशा में स्पष्ट है कि जिस प्रकार बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) तौर पर मुहम्मद और अहमद नाम रखे जाने से दो मुहम्मद और दो अहमद नहीं हो गये। इसी प्रकार बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) तौर पर नबी या रसूल कहने से यह अनिवार्य नहीं कि ख़ात्मुनबीयीन की मुहर टूट गयी क्योंकि बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) वजूद कोई अलग वजूद नहीं। इस तरह पर तो मुहम्मद के नाम की नुबुव्वत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक ही सीमित रही। तमाम् नबी इस पर एकमत हैं कि बुरूज़ (प्रतिबिम्ब या प्रतिरूप) में कोई अन्तर या मतभेद नहीं होता। क्योंकि बुरूज़ (प्रतिबिम्ब) का स्थान इस लेख के अनुरूप होता है कि

من تو شدم تو من شدی   من تن شدم تو جاں شدی
تا کس نہ گوید بعد زیں   من دیگرم تو دیگری

अनुवाद– मैं तू बन गया, तू मैं बन गया, मैं तन बन गया, तू जान (प्राण) बन गया। ताकि बाद में कोई यह न कह सके कि मैं कोई और हूँ और तू कोई और –अनुवादक।

लेकिन अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पुनः दुनिया में आये तो ख़ात्मुन्नबीयीन की मुहर तोड़े बिना कैसे दुनिया में आ सकते हैं? ख़ात्मुन्नबीयीन का शब्द एक ख़ुदा तआला की मुहर है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत पर लग गयी है। अब सम्भव नहीं कि कभी यह मुहर टूट जाय। हाँ यह सम्भव है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार नहीं बल्कि हज़ार बार दुनिया में बुरूज़ी (अर्थात प्रतिरूप के) रंग में आ

जायें और प्रतिरूप के रंग में और विशेषताओं के साथ अपनी नुबुव्वत का भी इज़हार करें। और यह बुरूज़ (प्रतिरूप), ख़ुदा तआला की ओर से किया गया एक निश्चित वचन था। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ

और नबियों को अपने बुरूज़(प्रतिरूप) पर ग़ैरत नहीं होती। क्योंकि वह उन्हीं की सूरत और उन्हीं का रूप है। लेकिन दूसरे पर अवश्य ग़ैरत होती है। देखो हज़रत मूसा[अलै.] ने मेराज की रात जब देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके मुक़ाम से आगे निकल गये तो कैसे रो-रोकर अपनी ग़ैरत प्रकट की। तो फिर जिस दशा में ख़ुदा तो कहे कि तेरे बाद कोई दूसरा नबी नहीं आएगा और फिर अपने बयान के उलट ईसा को भेज दे तो फिर यह काम कितना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल को कष्ट पहुँचाने का कारण होगा। लेकिन बुरूज़ी (प्रतिरूपी) रंग की नुबुव्वत से ख़त्म-ए-नुबुव्वत में कोई फ़र्क़ नहीं आता और न मुहर टूटती है। लेकिन किसी दूसरे नबी के आने से इस्लाम की जड़ उखड़ जाती है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इसमें बहुत बड़ा अपमान है कि दज्जाल के क़त्ल का महान कार्य ईसा से हुआ न कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से, और इससे पवित्र आयत وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ नऊज़ बिल्लाह, झूठी ठहरती है। और इस आयत में एक भविष्यवाणी पायी जाती है और वह यह है कि अब नुबुव्वत पर क़यामत तक मुहर लग गयी है और बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) वजूद के अतिरिक्त जो कि स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वजूद है किसी दूसरे में यह सामर्थ्य नहीं जो खुले-खुले तौर पर नबियों की भाँति ख़ुदा से कोई ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान पावे। और वह बुरूज़-ए-मुहम्मदी (मुहम्मद स.अ.व. का प्रतिरूप) जिसका आना पुरातन से तय था, वह मैं हूँ इसलिए बुरूज़ी (प्रतिरूपी) रंग की नुबुव्वत मुझे दी गयी। और उस नुबुव्वत के सामने अब सारी दुनिया बेबस है क्योंकि नुबुव्वत पर मुहर है। एक बुरूज़-ए-मुहम्मदी (मुहम्मद स.अ.व. का प्रतिरूप) मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम् विशेषताओं के साथ आख़िरी ज़माने के लिए मुक़द्दर था अतएव वह प्रकट हो गया। अब इस खिड़की के अतिरिक्त दूसरी कोई खिड़की नुबुव्वत के कुंड से पानी लेने के लिए शेष नहीं। सारांश यह कि बुरूज़ी (प्रतिरूपी) तौर की नुबुव्वत और रिसालत से ख़त्मियत की मुहर नहीं टूटती। और हज़रत ईसा के पुनः आगमन का विचार, जो आयत وَلٰكِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ को पूर्ण रूप से झुठलाता है, वह ख़त्मियत की मुहर को तोड़ता है और इस व्यर्थ और अक़ीदे के खिलाफ़ बात का तो क़ुरआन शरीफ़ में निशान तक नहीं और कैसे हो सकता क्योंकि वह उपरोक्त प्रशंसित आयत के स्पष्टतः विपरीत है। लेकिन एक बुरूज़ी (प्रतिरूपी) नबी और रसूल का आना क़ुरआन शरीफ़ से साबित हो रहा है। जैसा कि आयत وَاٰخَرِيۡنَ مِنۡهُمۡ से स्पष्ट है। इस आयत में एक रहस्यपूर्ण बयान यह है कि उस गिरोह का वर्णन तो इसमें किया गया जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से ठहराए गये लेकिन इस जगह उस आने वाले बुरूज़ (प्रतिरूप) का स्पष्टतः वर्णन नहीं किया अर्थात मसीह मौऊद का, जिसके माध्यम से वे लोग सहाबा ठहरे और सहाबा की तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ेरे तरबियत समझे गए। आने वाले मसीह मौऊद का पूर्णतः स्पष्ट वर्णन न करने से यह इशारा अपेक्षित है कि आने वाला बुरूज़ (प्रतिरूप) स्वयं कोई अपना अस्तित्व नहीं रखता इसलिए उसकी बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) नुबुव्वत और रिसालत से मुहर-ए- ख़त्मियत नहीं टूटती। इसलिए आयत में उसको एक अनस्तित्व वजूद की तरह रहने दिया और उस के बदले में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रस्तुत कर दिया है और इसी तरह आयत

اِنَّاۤ اَعۡطَيۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ (سورة الکوثر آیت ۲)۔

में एक बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) वजूद का वादा दिया गया जिसके ज़माने में कौसर फूटेगा अर्थात दीनी (धार्मिक) बरकतों के स्रोत बह निकलेंगे और बहुत अधिक संसार में सच्चे मुसलमान हो जायेंगे। इस आयत में भी भौतिक सन्तान की आवश्यकता को निम्नकोटि की समझा गया और बुरूज़ी (प्रतिरूप

स्वरूप) सन्तान की भविष्यवाणी की गई। और यहाँ तक कि ख़ुदा ने मुझे यह सौभाग्य प्रदान किया है कि मैं इस्राइली भी हूँ और फ़ातिमी भी। और दोनों ख़ून मुझ में पाये जाते हैं लेकिन मैं रूहानियत के रिश्ते को प्राथमिकता देता हूँ जो बुरूज़ी (अर्थात प्रतिबिम्ब या प्रतिरूप का) रिश्ता है। अब इस सारी तहरीर से मेरा तात्पर्य यह है कि अज्ञान मुख़ालिफ़ मुझ पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि यह व्यक्ति नबी या रसूल होने का दावा करता है मुझे ऐसा कोई दावा नहीं, मैं उस तौर से जो वे ख़याल करते हैं न नबी हूँ न रसूल हूँ। हाँ मैं उस तौर से नबी और रसूल हूँ जिस तौर से अभी मैंने ऊपर बयान किया है। अतः जो व्यक्ति मुझ पर शरारत से यह इल्ज़ाम लगाता है और जो दावा नुबुव्वत और रिसालत का (मेरे बारे में) वे करते हैं वह झूठा और गन्दा ख़याल है। मुझे बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) हालत ने नबी और रसूल बनाया है और इसी आधार पर ख़ुदा ने बार-बार मेरा नाम नबीयुल्लाह और रसूलुल्लाह रखा, मगर बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित) हालत में। मेरा अस्तित्व बीच में नहीं है बल्कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है। इसी दृष्टिकोण से मेरा नाम मुहम्मद और अहमद हुआ। अतएव नुबुव्वत और रिसालत किसी दूसरे के पास नहीं गई। मुहम्मद (स.अ.व) की चीज़ मुहम्मद के पास ही रही, अलैहिस्सलातु वस्सलाम।

ख़ाकसार

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

क़ादियान

5 नवम्बर सन् 1901 ई.

परिशिष्ट

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलातु वस्सलाम का सबसे आख़िरी पत्र।

अपनी नुबुव्वत के संबंध में

अख़बार–ए–आम 26 मई सन् 1908 ई.

जिसकी प्रतिलिपि अख़बार बदर न. 33 जिल्द 7 तिथि 11 जून सन् 1908 ई. में भी प्रकाशित हो चुकी है।

17 मई सन् 1908 ई. को जलसा–ए–दावत लाहौर में जो तक़रीर हज़रत अक़दस ने की थी उस तक़रीर के आधार पर यह ग़लत ख़बर पर्चा अख़बार–ए–आम 23 मई सन् 1908 ई. में प्रकाशित हुई कि आपने इस जलसा–ए–दावत में नुबुव्वत के दावा से इन्कार किया है तो उसी दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एडीटर अख़बार–ए–आम की सेवा में एक पत्र भेजा जिसमें उस ग़लत ख़बर का खण्डन किया। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वह पत्र निम्नलिखित है:–

''जनाब एडीटर साहिब अख़बार–ए–आम

पर्चा अख़बार–ए–आम 23 मई सन् 1908 ई. के पहले कालम की दूसरी पंक्ति में मेरे बारे में यह ख़बर लिखी है कि मानों मैंने जलसा–ए–दावत में नुबुव्वत से इन्कार किया। उसके जवाब में स्पष्ट हो कि उस जलसा में मैंने सिर्फ यह तक़रीर की थी कि मैं हमेशा अपनी रचनाओं के द्वारा लोगों को सूचना देता रहा हूँ और अब भी स्पष्ट करता हूँ कि यह इल्ज़ाम जो मुझ पर लगाया जाता है कि मानो मैं ऐसी नुबुव्वत का दावा करता हूँ जिससे मुझे इस्लाम से कुछ सम्बन्ध बाक़ी नहीं रहता और जिसका यह अर्थ है कि मैं

स्वतन्त्र तौर पर बिना किसी माध्यम और पैरवी (अनुसरण) के अपने आप को ऐसा नबी समझता हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ की पैरवी की कुछ ज़रूरत नहीं और अपना अलग कलिमा और अलग क़िबला (काबा शरीफ़) बनाता हूँ और शरीअत-ए-इस्लाम को निरस्त की तरह ठहराता हूँ और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण और पैरवी से बाहर जाता हूँ। यह इल्ज़ाम सही नहीं है। बल्कि नुबुव्वत का ऐसा दावा मेरे निकट कुफ़्र है, और न आज से बल्कि अपनी हर एक किताब में हमेशा मैं यही लिखता आया हूँ कि इस प्रकार की नुबुव्वत का मुझे कोई दावा नहीं, यह सरासर मुझ पर तोहमत है। जिस आधार पर मैं अपने आप को नबी कहलाता हूँ वह सिर्फ़ इतना है कि मैं ख़ुदा तआला की हमकलामी से सम्मानित हूँ (अर्थात मुझे ख़ुदा तआला से संवाद का सौभाग्य प्राप्त है)और वह मेरे साथ कसरत से बोलता और बातें करता है और मेरी बातों का जवाब देता है और बहुत सी ग़ैब (परोक्ष) की बातें मुझ पर प्रकट करता है और भविष्य के ज़मानों के वे रहस्य मुझ पर खोलता है कि जब तक मनुष्य को उसके साथ विशेष सामीप्य प्राप्त न हो दूसरे पर वे रहस्य नहीं खोलता और इन्हीं विषयों की अधिकता के कारण उसने मेरा नाम नबी रखा है। इसलिए मैं ख़ुदा के आदेश के अनुसार नबी हूँ और अगर मैं इससे इन्कार करूँ तो मेरा गुनाह होगा। और जिस दशा में ख़ुदा मेरा नाम नबी रखता है तो मैं कैसे इन्कार कर सकता हूँ। मैं इस पर अडिग हूँ **उस समय तक जो इस दुनिया से गुज़र जाऊँ**। मगर मैं इन अर्थों की दृष्टि से नबी नहीं हूँ कि मानो इस्लाम से अपने आप को अलग करता हूँ या इस्लाम का कोई आदेश रद्द करता हूँ। मेरी गर्दन उस जुए के नीचे है जो क़ुरआन शरीफ़ ने प्रस्तुत किया है और किसी को सामर्थ्य नहीं कि एक नुक़्ता या शोशः (अर्थात अंशमात्र) क़ुरआन शरीफ़ का रद्द कर सके। अतः मैं सिर्फ़ इस कारण से नबी कहलाता हूँ कि अरबी और इब्रानी भाषा में नबी का यह अर्थ है कि ख़ुदा से इल्हाम (ईशवाणी) पाकर बहुत सी पेशगोई

(भविष्यवाणी) करने वाला। और बिना अधिकता के यह अर्थ चरितार्थ नहीं हो सकता। जैसे कि सिर्फ़ एक पैसा के होने से कोई धनवान् नहीं कहला सकता। अतः ख़ुदा ने मुझे अपनी वाणी के द्वारा कसरत से ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान प्रदान किया है और हज़ारों निशान मेरे हाथ पर प्रकट किए हैं और कर रहा है। मैं अपने मुँह से अपनी बड़ाई नहीं करता बल्कि ख़ुदा की कृपा और उसके वादा के आधार पर कहता हूँ कि अगर सारी दुनिया एक तरफ़ हो और एक तरफ़ सिर्फ़ मैं खड़ा किया जाऊँ, और कोई ऐसा विषय प्रस्तुत किया जाय जिससे ख़ुदा के भक्त आज़माए जाते हैं तो मुझे उस मुकाबले में ख़ुदा आधिपत्य प्रदान करेगा। और हर एक पहलू के मुक़ाबले में ख़ुदा मेरे साथ होगा और हर एक मैदान में वह मुझे विजय प्रदान करेगा। अतएव इसी आधार पर ख़ुदा ने मेरा नाम नबी रखा है। इस ज़माने में कसरत से ईश्वरीय संवाद और संबोधन और ग़ैब (परोक्ष) की बातों की कसरत से सूचना सिर्फ़ मुझे ही प्रदान की गई है। और जिस दशा में साधारण तौर पर लोगों को ख़्वाबें भी आती हैं और कुछ को इल्हाम भी होता है और कुछ हद तक मिलौनी के साथ ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान से भी सूचित किया जाता है। मगर वह इल्हाम मिक़्दार (परिमाण) में बहुत ही कम होता है और परोक्ष की भविष्यवाणियाँ भी उसमें बहुत कम होती हैं और इस कमी के अलावा सन्देह युक्त, अस्पष्ट और काम वासना से सम्बन्ध रखने वाले विचारों से भरी हुई होती हैं तो इस दशा में सद्‌बुद्धि स्वयं यह चाहती है कि जिसकी ईशवाणी और परोक्ष ज्ञान इस सन्देह और त्रुटि से पवित्र हो उसको दूसरे साधारण व्यक्तियों के साथ न मिलाया जाय बल्कि उसको किसी विशेष नाम के साथ पुकारा जाय ताकि उस में और दूसरे में अन्तर हो। इसलिए केवल मुझे विशिष्ट स्थान प्रदान करने के लिए ख़ुदा ने मेरा नाम नबी रख दिया और मुझे एक सम्मान की उपाधि दी गयी ताकि उन में और मुझ में अन्तर स्पष्ट हो जाय। इन अर्थों से मैं नबी हूँ और उम्मती भी हूँ। ताकि हमारे सैय्यद व आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह भविष्यवाणी पूरी हो कि आने वाला

मसीह उम्मती भी होगा और नबी भी होगा। अन्यथा हज़रत ईसा जिनके पुनः आने की प्रतीक्षा है एक झूठी उम्मीद और झूठी अभिलाषा लोगों को लगी हुई है। वह उम्मती कैसे बन सकते हैं ? क्या आसमान से उतर कर नये सिरे से वह मुसलमान होंगे या क्या उस समय हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ात्मुल अम्बिया नहीं रहेंगे।

सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया।

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

23 मई सन् 1908 ई.

लाहौर से